हिन्दी-उर्दू ग़ज़ल में क़ाफ़िया-व्यवस्था

(उदय शाह)

हिन्दी भाषा और उसकी लिपि के अनुरूप इस नयी पद्धति से ग़ज़ल में क़ाफ़िया-व्यवस्था को समझना और आसान हो जाएगा क्योंकि इस पद्धति में क़ाफ़िया के सिर्फ़ मुख्यअक्षर को ही समझना होगा। क़ाफ़िया में मुख्यअक्षर के बाद वाले सभी अक्षर एकसमान ही रहते हैं और मुख्यअक्षर से पहले वाले अक्षरों का क़ाफ़िया-व्यवस्था तय करने में कोई महत्व नहीं है। मुख्यअक्षर से पहले वाले अक्षरों का सिर्फ़ लगात्मक स्वरूप ही छंद/बहर के मुताबिक़ हो इतना ही ज़रूरी है। इस नयी पद्धति में ग़ज़ल में छंद/बहर के साथ क़ाफ़िया-व्यवस्था को भी लिखा जा सकता है। हिन्दी यानि कि देवनागरी लिपि में और उर्दू लिपि में मूलभूत तफ़ावत यह है कि हिन्दी में स्वरचिह्न को व्यंजन के साथ जोड़ के लिखा जाता है जब कि उर्दू में स्वरचिह्न को अंग्रेजी की तरह व्यंजन के बाद अलग से लिखा जाता है। इस नयी पद्धति से क़ाफ़िया-व्यवस्था को समझने में इस मूलभूत तफ़ावत को ध्यान में रखना होगा। उर्दू ग़ज़लों को भी देवनागरी लिपि में लिख कर उसे इस नयी पद्धति से समझने पर उर्दू ग़ज़लों में भी क़ाफ़िया-व्यवस्था को समझना आसान हो जाएगा ऐसा मेरा मत है।

सामान उच्चारांत वाले शब्दों को ग़ज़ल में क़ाफ़िया के तौर पर प्रयोग में लिया जाता है। शब्दों में उच्चारांत की समानता स्वर के कारन होती है। क़ाफ़िया के शब्दों में जिन अक्षरों के सिर्फ़ स्वर के कारन उच्चारांत में समानता होती है उन अक्षरों के बाद वाले सभी अक्षर क़ाफ़िया के शब्दों में एकसमान होते है अथवा क़ाफ़िया के शब्दों के सिर्फ़ अंत्याक्षर के ही स्वर एकसमान होते हैं। जैसे कि सहारा-हमारा-किनारा-उतारा, काम-नाम-जाम-दाम, हवा-वफ़ा-सिला-जुदा। जिन अक्षरों के स्वर के कारन उच्चारांत में समानता आई है उसे कौंस में दर्शा कर फिर से प्रस्तुत करता हूं। स(हा)रा-ह(मा)रा-कि(ना)रा-उ(ता)रा, (का)म-(ना)म-(जा)म-(दा)म, ह(वा)-व(फ़ा)-सि(ला)-जु(दा)।

क़ाफ़िया में जिन अक्षरों के स्वर एकसमान होते हैं और उसके बाद वाले सभी अक्षर स्वर-व्यंजन के क्रमानुसार एकसमान होते हैं उन अक्षरों को मुख्यअक्षर कहा जाएगा। क़ाफ़िया में से मुख्यअक्षर का स्वर और उसके बाद वाले सभी एकसमान अक्षरों को यानि कि क़ाफ़िया-व्यवस्था के भाग को निकाल दिया जाए तो क़ाफ़िया के शब्द अर्थहीन हो जाएंगे अथवा उसका मूल अर्थ बदल जाएगा। मतले के दोनों क़ाफ़ियों में मुख्यअक्षरों के स्वर एकसमान होते हैं और व्यंजन अलग अलग होते हैं अथवा एक स्वर और दूसरा उसी स्वरयुक्त व्यंजन होते हैं। इस पद्धति के मुताबिक़ मुख्यअक्षर का स्वरांत होना आवश्यक होने के कारन जोडाक्षर यानि कि हलंतोच्चार वाले अक्षर मुख्यअक्षर नहीं बन सकते। मुख्यअक्षर

को क़ाफ़ियाक्षर भी कहा जा सकता है लेकिन मैंने अपने गुजराती अभ्यास लेखों में क़ाफ़ियाक्षर के लिये मुख्यअक्षर शब्द का ही प्रयोग किया था इसलिए यहां पर भी क़ाफ़ियाक्षर के लिये मुख्यअक्षर शब्द का ही प्रयोग करूंगा।

क़ाफ़िया-व्यवस्था = (मुख्यअक्षर का स्वराकार) + (मुख्यअक्षर के बाद वाले एकसमान अक्षर)

उर्दू ग़ज़लों को भी देवनागरी लिपि में लिख कर उसे इस नयी पद्धति से समझने पर उर्दू ग़ज़लों में भी क़ाफ़िया-व्यवस्था को समझना आसान हो जाएगा ऐसा मेरा मत है। इसलिए मिर्ज़ा ग़ालिब की कुछ उर्दू ग़ज़लों के मतलों को देवनागरी लिपि में प्रस्तुत कर के क़ाफ़िया-व्यवस्था समझाने की कोशिश करूंगा।

कब से हूं क्या बताऊं जहान-ए-ख़राब में
शबहा-ए-हिज्र को भी रखूं गर हिसाब में
- मिर्ज़ा ग़ालिब
क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+ब

उपरोक्त मतले में ख़राब और हिसाब क़ाफ़िया है कि जिसमें अंत्याक्षर 'ब' एकसमान है तथा उससे पहले वाले अक्षर अनुक्रम से 'रा' और 'सा' का स्वर 'आ' एकसमान है। इसलिए एकसमान स्वर वाले अक्षर 'रा' और 'सा' मुख्यअक्षर कहलाएंगे, जो आकारांत है।

क़ाफ़िया-व्यवस्था = (मुख्यअक्षर का स्वराकार) + (मुख्यअक्षर के बाद वाले एकसमान अक्षर)
क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+ब

ख़राब-हिसाब क़ाफ़िया में से मुख्यअक्षर का स्वर 'आ' और उसके बाद वाला एकसमान अक्षर 'ब' यानि कि क़ाफ़िया-व्यवस्था का भाग आकार+ब निकाल दिया जाए तो बाक़ी बचा भाग 'ख़र्' और 'हिस्' अर्थहीन हो जाते हैं अथवा उनका मूल अर्थ बदल जाएगा।

अब इस नयी पद्धति में मुख्यअक्षर का महत्व और उसके कार्य को भी समझ लेते हैं। हम जानते हैं कि मतले की दोनों पंक्ति के अंत में रदीफ़ का प्रयोग होता है कि जिसके शब्द एकसमान होते हैं तथा मतले की दोनों पंक्ति में रदीफ़ से पहले क़ाफ़िया का प्रयोग होता है कि जिसमें दोनों पंक्ति में क़ाफ़ियों के शब्द अलग अलग होते हैं मगर क़ाफ़िया के दोनों शब्दों के उच्चारांत एकसमान होते हैं। क़ाफ़िया के दोनों शब्दों में उच्चारांत की समानता का कारन स्वर होते हैं इसलिए मुख्यअक्षर का स्वरांत होना आवश्यक है। मतले में क़ाफ़िया से पहले प्रयुक्त शब्द अलग अलग होते हैं। मतले के दोनों क़ाफ़ियों में मुख्यअक्षर से पहले वाले अक्षर अलग अलग होते हैं और मुख्यअक्षर के बाद वाले अक्षर एकसमान होते हैं। मतले के

दोनों क़ाफ़ियों में मुख्यअक्षरों के व्यंजन अलग अलग होते हैं कि जिसका झुकाव क़ाफ़िया से पहले वाले अलग अलग शब्दों की ओर रहेगा तथा मतले के दोनों क़ाफ़ियों में मुख्यअक्षरों के स्वर एकसमान होते हैं कि जिसका झुकाव क़ाफ़िया के बाद वाले एकसमान शब्दों की ओर यानि की रदीफ़ की ओर रहेगा। इस तरह क़ाफ़िया से पहले वाले असमान भाग और क़ाफ़िया के बाद वाले एकसमान भाग को जोड़ने का काम मुख्यअक्षर करता है। मुख्यअक्षर वो कड़ी है जो क़ाफ़िया से पहले वाले असमान भाग और क़ाफ़िया के बाद वाले एकसमान भाग को जोड़ती है।

अब मैं उपरोक्त मतले के मुख्यअक्षरों को कौंस में दर्शाता हूं और उसके बाद कौंस में मुख्यअक्षर के व्यंजन और स्वर को अलग करके दर्शाता हूं। इससे आसानी से समझा जा सकता है कि मुख्यअक्षर वो कड़ी है जो क़ाफ़िया से पहले वाले असमान भाग और क़ाफ़िया के बाद वाले एकसमान भाग को जोड़ती है।

कब से हूं क्या बताऊं जहान-ए-ख़(रा)ब में
शबहा-ए-हिज्र को भी रखूं गर हि(सा)ब में

कब से हूं क्या बताऊं जहान-ए-ख़(र्+आ)ब में
शबहा-ए-हिज्र को भी रखूं गर हि(स्+आ)ब में

कुछ और मतले क़ाफ़िया-व्यवस्था के साथ प्रस्तुत है कि जिसमें मुख्यअक्षरों को कौंस में दर्शाया गया है।

इश्क़ मुझको नहीं वह(श)त ही सही
मेरी वहशत तेरी शोह(र)त ही सही
- मिर्ज़ा ग़ालिब
क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+त

ये न थी हमारी क़िस्मत कि विसाल-ए-(या)र होता
अगर और जीते रहते यही इन्ति(ज़ा)र होता
- मिर्ज़ा ग़ालिब
क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+र

हज़ारों ख़वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे (द)म निकले
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी (क)म निकले
- मिर्ज़ा ग़ालिब
क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+म

दिल-ए-नादां तुझे हु(आ) क्या है
आख़िर इस दर्द की द(वा) क्या है
- मिर्ज़ा ग़ालिब
क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+० = आकारांत

हर एक बात पे कहते हो तुम कि (तू) क्या है
तुम्ही कहो कि ये अंदाज़-ए-गुफ़्त(गू) क्या है
- मिर्ज़ा ग़ालिब
क़ाफ़िया-व्यवस्था = ऊकार+० = ऊकारांत

न था कुछ तो ख़ुदा था कुछ न होता तो ख़ु(दा) होता
डुबोया मुझको होने ने न होता मैं तो (क्या) होता
- मिर्ज़ा ग़ालिब
क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+० = आकारांत

"क़ाफ़िया में से मुख्यअक्षर का स्वर और उसके बाद वाले सभी एकसमान अक्षरों को यानि कि क़ाफ़िया-व्यवस्था के भाग को निकाल दिया जाए तो क़ाफ़िया के शब्द अर्थहीन हो जाएंगे अथवा उसका मूल अर्थ बदल जाएगा"। क़ाफ़िया-व्यवस्था कि चुस्तता के लिए इस नियम को निभाया जाए तो बेहतर है मगर इस नयी पद्धति में मुख्यअक्षरों के महत्व और कार्य को समझने के बाद मेरे मतानुसार इस नियम को निभाया न जाए तब भी कुछ ग़लत नहीं है। यानि कि इस नियम को छोड़ दिया जाए तब भी कुछ ग़लत नहीं है।

क़ाफ़िया में जिन अक्षरों के स्वर एकसमान होते हैं और उसके बाद वाले सभी अक्षर स्वर-व्यंजन के क्रमानुसार एकसमान होते हैं उन अक्षरों को मुख्यअक्षर कहा जाएगा। मतले के दोनों क़ाफ़ियों में मुख्यअक्षरों के स्वर एकसमान होते हैं और व्यंजन अलग अलग होते हैं अथवा एक स्वर और दूसरा उसी स्वरयुक्त व्यंजन होते हैं। इस पद्धति के मुताबिक़ मुख्यअक्षर का स्वरांत होना आवश्यक होने के कारन जोडाक्षर यानि कि हलंतोच्चार वाले अक्षर मुख्यअक्षर नहीं बन सकते।

क़ाफ़िया-व्यवस्था = (मुख्यअक्षर का स्वराकार) + (मुख्यअक्षर के बाद वाले एकसमान अक्षर)

कर-भर-डर-सर
क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+र

छापी-नापी-पापी-थापी
क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+पी

कारण-तारण-मारण-चारण
क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+रण

अमन-चमन-गमन-नमन
क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+मन

हवा-दवा-सवा-रवा
क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+वा

रंग-ढंग-भंग-जंग
क़ाफ़िया-व्यवस्था = अंकार+ग

हस्ती-मस्ती-बस्ती-सस्ती
क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+स्ती

हस्ती-सख़्ती-ज़ब्ती-तप्ती
क़ाफ़िया-व्यवस्था = जोडाक्षर+ती = हलंतोच्चार+ती = अयोग्य क़ाफ़िया

कसती-डसती-बसती-भसती
उच्चारण : कस्ती-डस्ती-बस्ती-भस्ती
क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+सती = अकार+स्ती

डसती-मरती-लड़ती-बढ़ती
उच्चारण = डस्ती-मर्ती-लड्ती-बढ्ती
क़ाफ़िया-व्यवस्था = हलंतोच्चार+ती = अयोग्य क़ाफ़िया

डगर-जिगर
क़ाफ़िया-व्यवस्था = ?

डगर-जिगर क़ाफ़िया में अंत्याक्षर ‘गर’ एकसमान है मगर उससे पहले वाले अक्षर ‘ड’ और ‘जि’ में स्वर की समानता न होने के कारन वह मुख्यअक्षर नहीं बन सकते इसलिए उन

दोनों शब्दों में अकारांत उच्चार वाला 'ग' ही मुख्यअक्षर कहलाएगा और मतले में डगर-जिगर शब्दों के प्रयोग से क़ाफ़ियादोष बनता है। क्योंकि मतले के दोनों क़ाफ़ियों में मुख्यअक्षरों के स्वर एकसमान होते हैं और व्यंजन अलग अलग होते हैं अथवा एक स्वर और दूसरा उसी स्वरयुक्त व्यंजन होते हैं।

जिन क़ाफ़ियों में क्रमानुसार एक से अधिक मुख्यअक्षर मिलते हों उनमें दो प्रकार की क़ाफ़िया-व्यवस्था प्राप्त होती है, चुस्त और अतिचुस्त। जहां पर क़ाफ़िया में चुस्त और अतिचुस्त दोनों प्रकार की क़ाफ़िया-व्यवस्था प्राप्त होती हो वहां पर दोनों क़ाफ़िया-व्यवस्था को अलग अलग समझने के हेतु सिर्फ़ उस प्रकार के क़ाफ़िया में क़ाफ़िया-व्यवस्था से पहले चुस्त और अतिचुस्त शब्दों का प्रयोग करेंगे। मतले में अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था होने पर भी बाक़ी के शेरों के क़ाफ़ियों में अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था को निभाना ज़रूरी नहीं है, सिर्फ़ चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था को ही निभाना ज़रूरी है। फिर भी पूरी ग़ज़ल में अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था को निभाया जाए तो ग़ज़ल में ओर भी निखार आ जाएगा।

सागर-पामर
चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+र
अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+अकार+र

मतले में सागर-पामर क़ाफ़िया लेने पर चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था अकार+र के अलावा अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था आकार+अकार+र भी प्राप्त होती है, फिर भी बाक़ी के शेरों में सिर्फ़ चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था अकार+र वाले क़ाफ़िये भीतर-झूमर-सुंदर-बनजर-शक्कर का भी प्रयोग किया जा सकता है।

भीतर-पीपर
चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+र
अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = ईकार+अकार+र

झूमर-सूकर
चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+र
अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = ऊकार+अकार+र

किनारा-सितारा
चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+रा
अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = इकार+आकार+रा

पुराना-चुकाना
चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+ना
अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = उकार+आकार+ना

सहारा-पनारा
चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+रा
अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+आकार+रा

अमन-नयन
चुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+न
अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+अकार+न

जिन क़ाफ़ियों में एकसमान अंत्याक्षर न हो और सिर्फ़ अंतिम अक्षरों के सिर्फ़ स्वर ही एकसमान हो उसे हम स्वरांत क़ाफ़िया कहेंगे। स्वरांत क़ाफ़िया भी चुस्त क़ाफ़िया ही कहे जाते हैं। स्वरांत क़ाफ़िया में सिर्फ़ अकारांत और हलंतोच्चारांत समानता वाले क़ाफ़िये अयोग्य क़ाफ़िये कहलाएंगे।

वफ़ा-दवा-सिला-जुदा
क़ाफ़िया-व्यवस्था = आकार+० = आकारांत

जागी-डाली-तीखी-फूंकी-चोरी
क़ाफ़िया-व्यवस्था = ईकार+० = ईकारांत

काट-जान-नाम-दाग़
क़ाफ़िया-व्यवस्था = अकार+० = अकारांत = अयोग्य क़ाफ़िया

अमर-जगत-सनम-नयन
उच्चारण : अमर्-जगत्-सनम्-नयन्
क़ाफ़िया-व्यवस्था = हलंतोच्चार+० = हलंतोच्चारांत = अयोग्य क़ाफ़िया

मैं मानता हूं कि हिन्दी-उर्दू ग़ज़लों में इस नयी पद्धति से क़ाफ़िया-व्यवस्था को समझना बहुत ही सरल हो जाएगा। आपको क़ाफ़िया-व्यवस्था समझने की यह नयी पद्धति उचित और सरल लगे तो आप इसे अपना सकते हैं, अन्यथा इसका अस्वीकार करने का भी आपको पूर्ण अधिकार है।

Uday Shah
'Kusum',
115/A, Dharmin Nagar,
Kabilpore,
Navsari – 396445,
Gujarat – India.
(M) +919428882632

Website to Download All PDF of My Research about Ghazal
https://sites.google.com/site/udayshahghazal/

Subjects of My Research :-
(1) TaalShastra of Ghazal
(2) ChhandShastra of Ghazal
(3) Arrangement of Kafiya in Ghazal